UP Board Notes Class 6 Hindi Chapter 18 सन्त रविदास (महान व्यक्तिव)

पाठ का सारांश

सन्त रविदास का जन्म काशी में हुआ। इनके पिता का नाम रग्घू और माता का नाम घुरबिनिया था। रविदास पिता की तरह जूते बनाने का कार्य लगन से करते थे। समय-पालन की इनकी आदत और मधुर व्यवहार से लोग खुश रहते थे। रविदास साधुओं को बिना मूल्य जूते दे देते थे। ये अपना खाली समय अपने गुरु रामानन्द के साथ बिताते थे। सन्त रविदास को एक व्यक्ति को जूते बनाकर देने थे। इस कारण ये गंगा स्नान को नहीं जा सके। इन्होंने कहा, "मन चंगा तो : कठौती में गंगा"। ये वचन के पक्के होने और अन्त:करण की शुद्धि पर जोर देते थे।

रविदास के जन्म के समय समाज में अन्धविश्वास, धार्मिक आडम्बर और छुआछूत जैसी बुराइयाँ । व्याप्त थीं, जिन्हें दूर करने का इन्होंने प्रयास किया। इन्होंने बाह्य आडम्बर और भक्ति में अन्तर बताया और स्वरचित भजन गाए। ईश्वर से मिलने के लिए इन्होंने आचरण की पवित्रता और भक्तिभाव जाग्रत करने को कहा। रविदास कर्म को ही ईश्वर भक्ति मानते थे। खाली समय वे साधु संगति और ईश्वर भजने में बिताते थे।

रविदास के विचार में राम, कृष्ण, करीम, अल्लाह सब एक ईश्वर के नाम हैं। सभी धर्म ईश्वर आराधना पर बल देते हैं। इस कारण ईश्वर नाम पर विवाद व्यर्थ है। सभी मनुष्य ईश्वर की सन्तान हैं और एक समान हैं। मनुष्य को अभिमान छोड़कर परोपकार करना चाहिए। सन्त रविदास के अनुसार मनुष्य जन्म और व्यवसाय से नहीं, वरन् अपने विचारों की श्रेष्ठता, समाज हित के कार्यों और सद्व्यवहार जैसे गुणों से ही महान बनता है।

https://www.evidyarthi.in/